प्राक्कथन

परिवर्तन प्रकृति का अनिवार्यता है। इससे कोई बच नहीं सकता। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस तत्व में किसी-न-किसी रूप में गतिशीलता बनी रही, अनेकानेक गतिरोधों के बावजूद अंतत: किसी -न-किसी अंश में उसका अस्तित्व विद्यमान रहा। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का मानना है कि समाज में गतिशीलता का बना रहना अच्छा है। प्रवाह सर्वत्र शोध-शक्ति का काम करता है- नदी में भी, जीवन में भी, साहित्य में भी। साहित्य जो समाज का दर्पण माना जाता हैं। समाज में लोगों द्वारा रचा गया है। साहित्य में एक साहित्यक रचना होती है वह है लोक साहित्य। लोक साहित्य वह जो लोगों द्वारा रचा गया साहित्य है। लोक साहित्य की रचना का कोई लेखक नहीं होता हैं। वह साहित्य समाज के सभी लोग द्वारा रचा जाता हैं।

लोक साहित्य के अंतर्गत में भी रचनाएं होती है, जैसे की लोक कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक नृत्य, लोक गीत, सुभाषितों का समावेश होता है। लोक साहित्य की रचना केवल एक या दो सदियों से नहीं होती हैं उनका उद्भव लोगों के साथ हुआ हैं। लोक साहित्य शिष्ट साहित्य के रूप में नहीं होता है। वह तो मौखिक साहित्य होता हैं। एक इंसान कोई गीत गाए तो बाकि के लोग भी वह गीत को गाते हैं और यहीं परंपरा सदीयों तक चली रहती हैं। यह रचना को लोक साहित्य माना जाता हैं।

लोक साहित्य का संकलन भी अभी अभी शुरू किया हैं। भारतीय लोक साहित्य का इतिहास बहुत ही बृहत रूप में मीलता हैं। भारत के अलग- अलग राज्यों के अपनी एक अलग लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य हैं। भारत में लोक साहित्य पर बहुत सारे लेखकों ने काम किया हैं, जिन्हें में बापुराव देसाई, श्याम परमार, सत्येंद्र, कृष्णदेव उपाध्याय आदी लेखकों का संकलन हमें मीलता है। भारत में सभी राज्यों के अपने अपने लोक साहित्य का एक अलग ही इतिहास हैं।

भारत में गुजरात राज्य का अपना बृहत रूप में लोक साहित्य का संकलन एवं इतिहास मीलता हैं। गुजरात प्रदेश में सौराष्ट्र को लोक साहित्य की मातृभूमि माना जाता हैं। गुजरात के लोक साहित्यकार में झवेर चंद मेघाणी जी को लोकसाहित्य के पिता माना जाता हैं। उनके अलावा जयमल्ल

Scanned with OKEN Scanner

परमार, बळवंत जानी, हसु याज्ञिक, आदि का भी महत्वपूर्ण योगादान हैं। गुजरात के लोक गीतों का प्रचार इतना हुवा हैं की कही सारे हिंदी फिल्मी गीतों भी उसका प्रयोग हुआ हैं। जैसे की "महेदी ते वावी मडंवे ने ऐनो रंग गयो गुजरात रे महेदी रंग लाग्यो", "लीली लेमडी रे लीलो नागरवेल नो छोड" आदी का प्रयोग हमे देखने को मीलता है। गुजरात का लोक गीत के साथ साथ उसका लोक नृत्य भी बहुत प्रचलित है। गुजरात का लोकनृत्य गरबा विश्व विख्यात है। आज भी गुजरात की नवरात्री को बहुत ही विशेष रूप में मनाया जाता हैं। गरबा का प्रयोग भी केवल एक गुजराती नही करता अपितु विश्व में रहने वाले सभी लोग को गरबा पसंद आता हैं। आज विदेशों मे भी गरबा का भी विशेष रूप से मनाया जाता है।

गुजरात के लोक साहित्य में लोक कथा एवं लोक गाथा भी प्रचुर मात्रा में मीलती है। लोक कथा में हमे जेसल तोरल की कथा तो साथ में राजा महाराजा की भी कथा मीलति है। लोक गाथा का भी विशेष रूप से मीलता हैं। लोक डायरा का भी गुजरात के लोक सहित्य में एक महत्वपूर्ण रूप से मीलता है। गुजरात के डायरा में हमें वीरों की गाथा का एवंम ऐतिहासिक रचनाओं का गान के साथ लोगों को मनोरंजन करते है। लोक साहित्य की एक रचना अख्यान भी हमें मीलता है। अख्यान में रामापीर, भाथीजी, का होता है, उनमें उनके बालकांड से लेके जो वीरों ने श्रेष्ठ काम किये है उनका गाने के माध्यम से लोगों को बाताते हैं। आख्यान में दोहों का गान होता है साथ मे वह एक वार्ता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अख्यान ज्यादत्तर मंदिर के प्रागण मे होते हैं। लोक साहित्य में कहावतों का भी महत्व दिया गया है। गुजराती कहावते का उपयोग कही सारी जगाहों पर होता है।

अपने शोध कार्य को छ अध्याय में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में भारत के प्रमुख लोक नाट्य का परिचय दिया है। उसके साथ साथ लोक शब्द, लोक साहित्य की व्याख्या जो विद्वानों ने की है उसका भी परिचय दिया है। उसके साथ साथ लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का अंतर भी बताया है। लोक साहित्य में भारत के जो प्रमुख राज्य के लोक नाट्य का विस्तार पूर्वक परिचय दिया है। लोक नाट्य अलग अलग राज्य के होकर भी वह कही न कही

Scanned with OKEN Scanner

साम्य है। उनको मुखी उद्देश्य लोक के प्रति जागृति लाना एवं अपनी परंपरा को पेढ़ी दर पेढ़ी तक फेलना है। हर एक नाट्य में मुख्य रूप से समाज के कल्याण की ही बात आती है। उसके साथ साथ हमारे वेश भूषा को महत्व दिया है। परंपरा को यही लोक नाट्य ने जिंदा रखा है।

द्वितीय अध्याय में गुजरात के लोक साहित्य के विकास का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात की लोक वार्ता, लोक कथा, लोक गाथ, लोक नृत्य, लोकगीत, लोक आख्यायन , लोक सुभाषितों का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात के लोग पहेले से ही धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुवा है। लोक गीत में लोक की भावना के साथ साथ अपने मन को प्रफुल्लित कराते लोक गीत के साथ-साथ लोक कथा जो रसात्मक रूप से उपदेश देती सामाजिक कथाओं का वर्णन किया है। लोक नाट्य भवाई मुख्य नाट्य के साथ गौण नाट्य का उद्भव और समाज से उनका जुड़ाव का सामाजिक कार्य का विस्तार से परिचय दिया है। लोक आख्यायन जिसमें पौराणिक कथा से आज की समस्याओं का वर्णन किया है। लोक शुभाषितों को गुजराती में कहावत के नाम से जाने जाते है। यहा पर हर एक बात पे कहावत मिल जाती है। उनका उपदेश छोटी बात में मिल जाता है।

तीसरे अध्याय में लोक नाट्य भवाई का समान्य रूप से परिचय दिया है। भवाई का इतिहास बहुत ही बृहद माना जाता है। असाइत जी ने जिस तरह से भवाई की रचना की उसका भी निरूपण दिया गया है। भवाई के स्वरूप जो वेश के मध्यम से होते है अगर भवाई में वेश नहीं होता तो भवाई का कोई अर्थ ही नहीं होता है। भवाई एक सामाजिक लोक नाट्य का मध्यम ही माना जाता है। उसके अतिरेक भवाई में भी कही सारे वेश आते है वह हमारे धर्म से जुड़े होते है। भवाई को भागों में विभाजित करके पारंपरिक एवं आधुनिक भवाई की चर्चा कराते उसमें उपयोग होते वाद्य की भी चर्चा का विषय बना है। भवाई गुजरात के साथ साथ उसका समान स्वरूप भी हमें अन्य लोक नाट्य में मिल जाता है उसकी थोड़ी सी चर्चा की है।

चौथे अध्याय में समाज में जो कु रिवाजो चल रहे है उसे सही रूप से नाटक के मध्यम से भवाई कलाकार ने लाए है। वह समय था जब कोई दृश्य का मध्यम नहीं था उसी समय असाइत ने यह वेषों की रचना

Scanned with OKEN Scanner

करके समाज जो उझागर करने की कोशिश की है। समाज में आज भी वह रिवाजो कही ना कही हमें देखने को मिल जाता है। आज भी भवाई के यह वेश हमे उतने ही महत्व रूप से उपयोग होते रहे है। यह नाट्य एक सामाजिक के ऊपर ही अधिक प्रयास किया गया है।

अंतिम अध्याय में भवाई सांस्कृति की धरोहर है और भवाई के कुछ अपने नियम के वही विस्तार रूप से बताया है। भवाई में भूगल वाद्य का जो महत्व है उसके जो नियम है, भवाई कलाकार के अपने जो नियम है वह विस्तार पूर्वक बताया गया है। भवाई में भूगल से जो मान देते है उनका भी विस्तार से चर्चा करते किस तरह भवाई लेखित नाटक से अलग होके अपनी मौलिकता को अपने संवाद से प्रेक्षको को अनादित करता है। भवाई एक नाट्य होकर भी समाज में हम से किस तरह से जुड़ा है उसका विस्तार से वर्णन किया है।

अध्याय छ में भवाई कलाकारो से साक्षात्कार किए और उनसे जो बात चित हुए वह एक वीडियो एवं ओड़ियों में एक सी.डी के साथ रखा है। उसके साथ फोटो का भी टंकण किया है।

भवाई में समाज को ध्यान में रखते हुए उनका ही महत्व दिया है। भवाई में लोकनाट्य में प्रचलित हुए साथ में एक ज्ञान का साधन बनकर भी आइ है। भवाई में जो वाजिंत्र होते हैं उनका भी एक अलग महत्व होता है। भवाई में प्रयोग होने वाली भाषा सामान्य भाषा होती है। सामान्य मनुष्य भी वह भाषा एवं भवाई में देने वाले संदेश को समज सके। भवाई के कलाकार होते जो होते है वह भवाई की जो नाट्य की बात है तो उनका कोई रचिता नहीं होता है। भवाई के कलाकार अपने आप हि उस नाट्य को अपने हिसाब से करते है। भवाई को पहले ना कोई रंगभूमि मिली थी वह तो गांव गांव जा कर गांव के मुख्य द्वार पर ही सब गांव के लोगों को एकठा करके भवाई को दिखाते है। आज समय के साथ उसका रूप भी बदला हैं। आज भवाई को एक रंगभूमि का स्थान दिया गया है। आधुनिक भवाई जो है वह केवल एक विषय को लेकर होती है जब कि पारंपारिक भवाई जो होती वह भवाई सभी वेशों को लेकर होती है। पारंपारिक भवाई रात भर चलती है। भवाई लोक नाट्य को अपने तरफ से हो सके उतना

Scanned with OKEN Scanner

श्रेष्ठ बनाने की कोशीश कि है। भवाई में आगे भी शोध हो सकती है जैसे कि आधुनिक एवं पारंपारिक भवाई। भवाई के लुप्त हुए वेशों के अंतर्गत हो सकता है। अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की गई है।

Scanned with OKEN Scanner